5 मैथिलीशरण गुप्त

जीवन-परिचय—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में चिरगाँव जिला झाँसी में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण जी रामभक्त और काव्यप्रेमी थे। उन्हीं से गुप्तजी को काव्य-संस्कार प्राप्त हुआ। इन्होंने कक्षा 9 तक ही विद्यालयीय शिक्षा प्राप्त की थी, किन्तु स्वाध्याय से अनेक भाषाओं के साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने बचपन में ही काव्य-रचना करके अपने पिता से महान् कवि बनने का आशीर्वाद प्राप्त किया था। महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने के बाद उनको अपना काव्य-गुरु मानने लगे। पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त गुप्तजी के संस्कार को द्विवेदीजी ने सँवारा एवं सजाया। द्विवेदीजी के आदेश पर गुप्तजी ने सर्वप्रथम 'भारत-भारती' नामक काव्य-ग्रन्थ की रचना कर युवाओं में देश-प्रेम की सरिता बहा दी। गुप्तजी गाँधीजी के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रभाव में आये और उसमें सक्रिय भाग लिया। इन्होंने देश-प्रेम, समाज-सुधार, धर्म, राजनीति, भक्ति आदि सभी विषयों पर रचनाएँ कीं। राष्ट्रीय विषयों पर लिखने के कारण ये 'राष्ट्रकवि' कहलाये। सन् 1948 ई० में आगरा विश्वविद्यालय तथा सन् 1958 ई० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने डी० लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1954 ई० में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से इन्हें अलंकृत किया। हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार, मंगला प्रसाद पुरस्कार, साहित्य वाचस्पति पुरस्कार से भी इन्हें सम्मानित किया गया। दो बार ये राज्यसभा के सदस्य भी मनोनीत हुए। इनका देहावसान 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई० को हुआ।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1886 ई०।
- **जन्म-स्थान**—चिरगाँव (झाँसी), उ० प्र०।
- **पिता**—सेठ रामचरण गुप्त।
- **मृत्यु**—सन् 1964 ई०।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- **प्रेरणास्रोत**—महावीरप्रसाद द्विवेदी।
- द्विवेदी युग के कवि।

साहित्यिक सेवाएँ—गुप्तजी की प्रारम्भिक रचनाएँ कलकत्ता से प्रकाशित पत्रिका 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित होती थीं। द्विवेदीजी के सम्पर्क में आने के बाद इनकी रचनाएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगीं। सन् 1909 ई० में इनकी सर्वप्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन हुआ। इसके बाद सन् 1912 ई० में 'भारत भारती' के प्रकाशित होने से इन्हें अपार ख्याति प्राप्त हुई। इन्होंने अनेक अद्वितीय कृतियों का सृजन कर सम्पूर्ण हिन्दी-साहित्य-जगत् को विस्मित कर दिया। खड़ीबोली के स्वरूप-निर्धारण और उसके विकास में इन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया।

रचनाएँ—महाकाव्य—साकेत, यशोधरा।

खण्ड काव्य—जयद्रथ बध, भारत-भारती, पंचवटी, द्वापर, सिद्धराज, नहुष, अंजलि और अर्घ्य, अजित, अर्जन और विसर्जन, काबा और कर्बला, किसान, कुणाल गीत, गुरु तेग बहादुर, गुरुकुल, जय भारत, युद्ध, झंकार, पृथ्वी पुत्र, वक संहार, शकुंतला, विश्व वेदना, राजा-प्रजा, विष्णुप्रिया, उर्मिला, लीला, प्रदक्षिणा, दिवोदास, भूमि भाग।

नाटक–रंग में भंग, राजा-प्रजा, वन वैभव, विकट भट, विरहिणी, वैतालिक, शक्ति, सैरन्ध्री, स्वदेश संगीत, हिडिम्बा, हिन्दू, चंद्रहास।

कविताओं का संग्रह–उच्छवास।

पत्रों का संग्रह–पत्रावली।

गुप्त जी के नाटक–गुप्त जी के अनूदित नाटक जो भास के नाटकों पर आधारित है।

गुप्त जी के नाटक	भास के अनूदित नाटक
अनघ	स्वप्नवासवदत्ता
चरणदास	प्रतिमा
तिलोत्तमा	अभिषेक
निष्क्रिय प्रतिरोध	आविमारक

अन्य अनूदित रचनाएँ–रत्नावली–(हर्षवर्द्धन)। मेघनाथ वध, विरहिणी, वज्रांगना, पलासी का युद्ध, रूबाइयात उमर खय्याम।

भाषा-शैली–गुप्तजी ने शुद्ध, साहित्यिक एवं परिमार्जित खड़ीबोली में रचनाएँ की हैं। इनकी भाषा सुगठित तथा ओज एवं प्रसाद गुण से युक्त है। इन्होंने अपने काव्य में संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू एवं प्रचलित विदेशी शब्दों के भी प्रयोग किये हैं। इनके द्वारा प्रयुक्त शैलियाँ हैं—प्रबन्धात्मक शैली, उपदेशात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, गीति शैली तथा नाट्य शैली। वस्तुतः आधुनिक युग में प्रचलित अधिकांश शैलियों को गुप्तजी ने अपनाया है।

♦

पंचवटी

(1)

चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अम्बर-तल में।
पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से,
मानो झूम रहे हैं तरु भी मन्द पवन के झोंकों से।

(2)

पंचवटी की छाया में है सुन्दर पर्ण-कुटीर बना,
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर धीर वीर निर्भीक मना,
जाग रहा यह कौन धनुर्धर जब कि भुवन-भर सोता है?
भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना दृष्टिगत होता है।।

(3)

किस व्रत में है व्रती वीर यह निद्रा का यों त्याग किए,
राजभोग के योग्य विपिन में बैठा आज विराग लिए।
बना हुआ है प्रहरी जिसका उस कुटीर में क्या धन है,
जिसकी रक्षा में रत इसका तन है, मन है, जीवन है।।

(4)

मर्त्यलोक-मालिन्य मेटने स्वामि-संग जो आयी है,
तीन लोक की लक्ष्मी ने यह कुटी आज अपनायी है।
वीर वंश की लाज यही है फिर क्यों वीर न हो प्रहरी?
विजन देश है, निशा शेष है, निशाचरी माया ठहरी।

(5)

क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा;
है स्वच्छंद-सुमंद गंध वह, निरानंद है कौन दिशा?
बंद नहीं, अब भी चलते हैं नियति-नटी के कार्य-कलाप,
पर कितने एकान्त भाव से कितने शान्त और चुपचाप।

(6)

है बिखेर देती वसुन्धरा मोती, सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको सदा सबेरा होने पर।
और विरामदायिनी अपनी संध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिससे उसका नया रूप झलकाता है।

(7)

सरल तरल जिन तुहिन कणों से हँसती हर्षित होती है,
अति आत्मीया प्रकृति हमारे साथ उन्हीं से रोती है।
अनजानी भूलों पर भी वह अदय दण्ड तो देती है,
पर बूढ़ों को भी बच्चों-सा सदय भाव से सेती है।

(8)

तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके, पर हैं मानो कल की बात,
वन को आते देख हमें जब आर्त, अचेत हुए थे तात।
अब वह समय निकट ही है जब अवधि पूर्ण होगी वन की।
किन्तु प्राप्ति होगी इस जन को इससे बढ़कर किस धन की?

(9)

और आर्य को? राज्य-भार तो वे प्रजार्थ ही धारेंगे,
व्यस्त रहेंगे, हम सबको भी मानो विवश बिसारेंगे।
कर विचार लोकोपकार का हमें न इससे होगा शोक,
पर अपना हित आप नहीं क्या कर सकता है यह नरलोक?

('पंचवटी' से)

अभ्यास प्रश्न

• विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(अ) चारु चन्द्र·····झोंकों से।
(ब) है बिखेर देती·····झलकाता है।
(स) किस व्रत में·····मन है, जीवन है।
(द) मर्त्यलोक-मालिन्य·····माया ठहरी।
(य) और आर्य को·····यह नरलोक।

2. मैथिलीशरण गुप्त की जीवनी एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
अथवा मैथिलीशरण गुप्त की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
अथवा मैथिलीशरण गुप्त के साहित्यिक एवं जीवन-परिचय पर प्रकाश डालिए।
3. 'पंचवटी' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'पंचवटी' की प्रकृति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. प्रहरी बना हुआ, वीर व्रती लक्ष्मण किस धन की रक्षा कर रहा है और वह धन कैसा है?
3. लक्ष्मण संसार के लोगों से क्या करने की आशा करते हैं?
4. 'पंचवटी' कविता में निहित मूल भाव से सम्बन्धित चार वाक्य लिखिए।
5. मैथिलीशरण गुप्त की भाषा-शैली लिखिए।
6. सन्ध्या के समय सूर्य को विरामदायिनी क्यों कहा गया है?

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं?
2. मैथिलीशरण गुप्त की दो प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।
3. 'साकेत' रचना पर गुप्तजी को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ?
4. साकेत की विषय-वस्तु क्या है?
5. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइए—
(अ) पंचवटी में श्रीराम की कुटी बनी हुई है। ( )
(ब) सूर्य के निकलने पर ओस की बूँदें गायब हो जाती हैं। ( )
(स) मैथिलीशरण गुप्त भारतेन्दु युग के कवि हैं। ( )

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
(अ) चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में।
(ब) जाग रहा यह कौन धनुर्धर जब कि भुवन-भर सोता है?
(स) मर्त्यलोक मालिन्य मेटने, स्वामि-संग जो आयी है।
2. निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए—
लोकोपकार, कुसुमायुध, निरानन्द, निस्तब्ध।
3. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए—
पंचवटी, वीरवंश, सभय, कुसुमायुध, नरलोक।
4. 'पंचवटी' शीर्षक कविता से अनुप्रास अलंकार का कोई एक उदाहरण लिखिए।

● आन्तरिक मूल्यांकन

(1) आप अपने घर की छत से चाँदनी रात देखिए तथा उसके सौन्दर्य को अपनी भाषा में शब्दबद्ध कीजिए।
(2) मैथिलीशरण गुप्त का जीवन-परिचय तालिका के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

♦